WWJMRD 2018; 4(4): 87-89
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
UGC Approved Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

कुलदीप वर्मा
शोध छात्र रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद उतर प्रदेश इडिया

कुलदीप वर्मा
शोध छात्र रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद उतर प्रदेश इडिया

ड्रग तस्करी और आतंकवाद के बीच सम्बन्ध

कुलदीप वर्मा

संक्षेपिका
आतंकी संगठन अपनी गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता होती है जिससे वे पर्याप्त मात्रा में आंतकियों की भर्ती व हथियारों की खरीद कर सकें। चूंकि अशिक्षित युवा जिनके पास आजीविका के सीमित साधन उपलब्ध है। उनके लिये आर्थिक प्रलोभन एक उत्प्रेरक के रूप में काम करता है। और इस धन की पूर्ति के लिये आतंकवादी संगठन मुख्यतः दो प्रकार से निर्भर है एक तो अवैध वसूलियों जिसमें कारोबारियों की जाने वाली उगाही व स्वेच्छा से दी जाने वाली रकम शामिल है दूसरी तरफ अवैध कारोबार चूंकि अवैध कारोबार में बेहिसाब लाभ होता है तो आतंकवादी संगठन या तो इन अवैध कारोबारियों से धन गाही करते हैं या वे खुद न अवैध कारोबारों को संचालित करते हैं।

मुख्य शब्द– आतंकी, ड्रग, तस्कर, अफगानिस्तान, भारत, अवैध

परिचय
हाल ही में गुरूदासपुर और पठानकोट में हुये आतंकवादी हमलों में जो तथ्य उभरकर सामने आये हैं उससे पता चलता है कि भारत में ड्रग तस्करी के जरिये बड़े आतंकवादी हमलों को अंजाम दिया जा रहा है। पठानकोट हमले की शुरूवाती जांचों से पता चलता है कि आतंकवादियों ने भारत में घूसने के लिये उन्हीं रास्तों का प्रयोग किया जिन रास्तों का प्रयोग ड्रग तस्कर करते थे। इससे ये भी पता चलता है कि आतंकवादियों की ड्रग तस्करों से साठ गांठ थी। इसके अतिरिक्त इस बात को मानने के पर्याप्त सबूत मौजूद है कि आतंकवादी अपने हमलों को अंजाम देने के लिये आर्थिक रूप से काफी हद तक ड्रग मनी पर निर्भर है। ड्रग तस्करी क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए दो तरफ से खतरा उत्पन्न कर रही है। एक तरह यह हमारी युवा आबादी को नशे का आदी बना रही है दूसरी तरह नशे के कारोबार से कमाई का प्रयोग आतंकवादी हमलों को अंजाम दिया जा रही है।
संयुक्त राष्ट्र के ड्रग और अपराध कार्यालय के अनुसार भारत के विभिन्न राज्यों में ड्रग सेवन करने वाले युवाओं की संख्या बहुत बड़े पैमाने पर है। पंजाब भारत का सीमा राज्य है। इसलिए अफगानिस्तान से पाकिस्तान तक अफीम पहुंचाने एवं पाकिस्तान से विश्व बाजार तक अफीम को पहुंचाने के लिये पंजाब के रास्ते का प्रयोग किया जाता हैं इसलिये पंजाब आज ड्रग व्यापार का प्रमुख स्थान बन गया है। पंजाब के युवा बहुत बुरी तरह से ड्रग्स के गिरफ्त में आ चुके हैं। एम्स के नेशनल ड्रग डिपेंडस सेंटर (छक्क्ज्) के सर्वेक्षणों में इस बात का पता चलता है कि पंजाब में एक बड़ी आबादी ड्रग्स सेवन की गिरफ्त में है। पाकिस्तान की तरफ से आने वाले इस ड्रग्स ने यहां की अर्थव्यवस्था को तो प्रभावित किया है। इसके साथ यहां की आंतरिक सुरक्षा के लिये भी एक बहुत बड़ा खतरा बन कर उभरा है। इस ड्रग्स के काराबार में यहां के स्थानीय नेता प्रशासनिक अधिकारी पुलिस इत्यादि सबकी संलिप्तता के संकेत है हाल ही में आई रिपोर्टों के अनुसार पंजाब की जेलों में बन्द कुल अपराधियों में आधे ड्रग्स के अपराधों में बन्द है। ड्रग्स के कारोबार के सरंक्षण मात्र से ही इस कारोबार में टपााप धन की प्राप्ति होती है और कानून व्यवस्था इस अपराध को आम अपराधों की तरह समझती है, जिससे सुरक्षा व्यवस्था के लिये यह बहुत बड़ी चुनौती बनकर उभर रही है।गौर करने वाली बात है विगत कुछ वर्षों में आंतकवादियों की कार्यशैली में व्यापक बदलाव आये है। वे अब छोटे–छोटे अपराधिक घटनाओं के जरियें बड़े आतंकवादी हमलों केा अंजाम दे रहे हैं। विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त करने से लेकर देश में फैले आतंकी गुटों तक पैसे व हथियार पहुंचाने से विभिन्न अपराधिक तत्वों का ही सहयोग लिया जा रहा है।
आतंकी संगठन अपनी गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता होती है जिससे वे पर्याप्त मात्रा में आंतकियों की भर्ती व हथियारों की खरीद कर सकें।

चूंकि अशिक्षित युवा जिनके पास आजीविका के सीमित साधन उपलब्ध है। उनके लिये आर्थिक प्रलोभन एक उत्प्रेरक के रूप में काम करता है। और इस धन की पूर्ति के लिये आतंकवादी संगठन मुख्यतः दो प्रकार से निर्भर है एक तो अवैध वसूलियों जिसमें कारोबारियों की जाने वाली उगाही व स्वेच्छा से दी जाने वाली रकम शामिल है दूसरी तरफ अवैध कारोबार चूंकि अवैध कारोबार में बेहिसाब लाभ होता है तो आतंकवादी संगठन या तो इन अवैध कारोबारियों से धन गाही करते हैं या वे खुद न अवैध कारोबारों को संचालित करते हैं। अवैध कारोबार में ड्रग्स की तस्करी सबसे अधिक मुनाफा देने वाला होता है तो अधिकतर आतंकी संगठन इस कारोबार में लिप्त होते हैं। ड्रग तस्करी आतंकी संगठनों के लिये आय मात्र का जरिया न होकर इससे कई तरह से आतंकवाद के प्रसार में इस्तेमाल करते हैं। सीमावर्ती इलाकों में घुसपैठ के लिये आतंगवादी ड्रग तस्करों की मदद लेते हैं और आतंकवादियों के रहने खाने का प्रबंध भी करते है। सुरक्षा एजेसियों की पड़ताल में यह पता चलता है कि युवको को आतंकी बनाने में मादक पदार्थों का बहुत बड़े स्तर पर प्रयोग किया जाता है। मादक पदार्थों के इस्तेमाल के द्वारा युवाओं के मस्तिष्क पर आसानी से नियंत्रण किया जा सकता है और धार्मिक आधार पर उनको भड़काकर विभिन्न आतंकी घटनाओ को अंजाम दिया जा सकता है ड्रग तस्करी आतंकी संगठना के लिये न केवल आम का बहुत बड़ा जरिया है बल्कि संगठन के विस्तार के लिये एक आसान जरिया है। ड्रग तस्करी का दूसरा गंभीर पहलू यह भी है कि जहां आतंकियों के बमों की पहुंच नहीं होती वहां ड्रग तस्करों के ड्रग बम अपना काम करते हैं। अतः यह आंतरिक सुरक्षा के लिये दोहरा खतरा होता है

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ड्रग तस्करी– अगर गहराई से आतंकवाद एवं ड्रग तस्करी के गठजोड़ की पड़ताल करें तो पाते हैं कि इनके पीछे सरकारों एवं संगठन की बड़ी भूमिका है जो इस गठजोड़ के जरिये वैश्विक सुरक्षा को खतरे में डाले हुये हैं। बहुत से देशों की अर्थव्यवस्था ड्रग व्यापार के भरोसे टिकी हुई है। इस आधार पर देखे तो अफगानिस्तान सम्पूर्ण विश्व में ड्रग्स उत्पादन के मामले में सर्वोपरि है और यहां के प्रमुख आतंकवादी संगठन तालिबान के द्वारा इसकी तस्करी अन्य देशों में की जाती है। संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स एवं अपराध कार्यालय द्वारा वर्ष 2014,2015 में जारी वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में सबसे अधिक गैरकानूनी तरीके से अफीम का उत्पादन अफगानिस्तान में किया जाता है जो सम्पूर्ण विश्व का लगभग 90प्रतिशत है। अफगानिस्तान के दक्षिणी प्रान्तों में अफीम का सबसे अधिक उत्पादन होता है। क्योंकि शुरूवात से ही यहां तालिबान का प्रभुत्त रहा है। 2014 में नाटों की वापसी के बाद इन प्रान्तों में अफीम उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है किन्तु यहां इस वर्ष इस उत्पादन में कमी आयी है जिसकी वजह यहां की सरकार द्वारा कुछ ठोस कदम उठाये गये हैं किन्तु इन सब के बावजूद यह रिकार्ड स्तर पर बना हुआ है। अफगानिस्तान के हेलमंद व कंधार प्रान्त में अफगानिस्तान की अधिकतर अफीम का उत्पादन होता है इसकी मुख्य वजह यह रही कि नाटो सैनिकों की वापसी के संकेत जैसे ही तालिबान को मिले उन्होंने बिना वक्त गंवाये इन प्रान्तों पर कब्जा कर लिया। वैसे भी तालिबान की अर्थव्यवस्था का मूल आधार अफीम की खेती करना ही है वे इसी के द्वारा अपनी जरूरतों को पूरा करते हैं। तालिबान नशीले पदार्थों के कारोबार के मामले में अंतरर्राष्ट्रीय बाजार की निगरानी भी करता है यह एक ऐसी गैर कानूनी व्यवस्था है जो बिल्कुल कानूनी व्यवस्था की भांति कार्य करती है। जब कभी अफीम के बाजार भाव में उतार चढ़ाव होता है तो उसी के अनुसार ये अपना उत्पादन बढ़ाते हैं या घटाते है।अफगानिस्तान में उत्पादित अफीम को हिरोइन में बदलने का कार्य पाकिस्तान द्वारा किया जाता है। पाकिस्तान से इस हिरोइन को अंतर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाने के लिये भारतीय सीमा में अवैध घुसपैठ के द्वारा किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स एवं अपराध कार्यालय की रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान का बलूचिस्तान और खैबर पख्तूवा ड्रग तस्करी के महत्वपूर्ण रास्ते हैं खैबर पख्तूवा से पाकिस्तान पंजाब होते हुये हेरोइन को भारतीय पंजाब में भेजा जाता है। इसी तरह यह हेरोइन अरब सागर होते हुये खाड़ी देशों में भी भेजा जाता है।

वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स एवं अपराध कार्यालय द्वारा जारी ड्रग्स मनीः द इलीसिट् प्रोसीडिंग ऑफ ओपियाट्स ट्रैफिक्ड आन बाल्कन रूट (क्तनह डवदमलरू जैम पससपबपज चतवबमके वि वचपंजमे जतांपिबामक वद जीम ठंसांद तवनजम) रिपोर्ट के अनुसार अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान की सीमा रेखाओं से होकर बड़ी मात्रा में अफीम और हेरोइन को बाल्कन देशों के रास्ते अमेरिका और यूरोप को पहुंचाया जाता है इस रिपोर्ट में बताया गया है कि इस रास्ते अमेरिका व यूरोप को भेजी जाने वाली अफीम व हेरोइन की कुल कीमत 28 बिलियन डालर प्रति वर्ष है जो अफगानिस्तान की कुल जी0डी0पी0 से बहुत अधिक है। अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान का यह क्षेत्र गोल्डन क्रींसेंट के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र विश्व में अफीम के उत्पादन के लिये जाना जाता है। गोल्डन क्रींसट में उत्पादित अफीम का मुख्य बाजार यूरोप, रूस, व अमेरिका है। इस क्षेत्र में उत्पादित कुल अफीम का एक तिहाई बाल्कन देशों के रास्ते यूरोप व अमेरिका को पंहुचाया जाता है और एक चौथाई हिरोइन को उत्तरी मार्ग से ईरान होते हुये मध्य एशिया एवं रूस तक पहुंचाया जाता है साथ ही एशिया में भी अफगानी हेरोइन की मांग बढ़ती ही जा रही है लगभग 15–20 मीट्रक टन हेरोइन चीन भेजी जाती है जबकि लगभग 35 मीट्रक टन अफीम की आपूर्ति दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में की जाती है और इतनी ही अफीम अफ्रीकी देशों में भी भेजी जाती है।

अफगानिस्तान के आलावा एशिया में हेरोइन के लिये प्रसिद्ध दूसरा क्षेत्र म्यांमार, लाओस और थाइलैण्ड का क्षेत्र गोल्डन ट्राइंगल के नाम से जाना जाता है। अफगानिस्तान से पहले यह क्षेत्र विश्व में सर्वाधिक अफीम का उत्पादन करता था। वर्तमान में भी अफगानिस्तान के बाद म्यांमार दूसरा सबसे बड़ा अवैध अफीम उत्पादक देश है। म्यांमार में उत्पादित इस अफीम को उत्तरी थाईलैण्ड और बैंकाक होते हुये अतंर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाया जाता है। दक्षिणी पूर्व एशिया से हेरोइन मुख्य रूप से अमेरिका भेजी जाती है। गोल्डन ट्राइंगल क्षेत्र से उत्पादित हेरोइन को अमेरिका तक पहुंचाने के लिये कैलीफोर्निया तथा हवाई प्रमुख प्रवेश बिन्दु है। परंतु कुछ भाग में ड्रग्स न्यूयार्क सिटी व वाशिंगटन डी0 सी0 तक भी पहुंचाये जाते हैं।

निष्कर्ष

गुरूदासपुर एवं पठानकोट हमलों में संभावित तौर पर ड्रग तस्करों की संलिप्तता भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिये एक बहुत बड़े खतरे की ओर संकेत करती है। समकालीन विश्व में ड्रग तस्करी एक गंभीर सुरक्षा चुनौती बनती जा रही है। आये दिन होने वाली आतंकी घटनायें इस बात का संकेत देती हैं कि आतंकी संगठन मजबूती से अपने पांव पसार रही हैं और इस बात के स्पष्ट सबूत हैं कि इन आतंकी संगठनों के तार ड्रग तस्करों से जुड़े हुये हैं। भारत के लिये ड्रग तस्करी दोतरफा चुनौती साबित हो रहा है एक ओर यह हमारी युवा पीढ़ी को नशे की चपेट में ले रहा है दूसरी तरफ उसी से कमाये गये पैसों से देश में आतंकी घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है हाल ही में ऐसी रिपोर्ट सामने आई है जिससे पता चलता है कि ड्रग नेटवर्क का इस्तेमाल बच्चों व महिलाओं की तस्करी में भी किया जा रहा है। ड्रग तस्करी पर लगाम लगाने के लिये बहुत से देश व संस्थायें प्रयासरत् है इन प्रयासों में पेरिस पैक्ट 2003 की भूमिका महत्वपूर्ण है वर्तमान में यूएन ओडीसी समेत 58 देश एवं 22 संस्थायें इस पैक्ट के सदस्य हैं इसका मुख्य कार्य

अफगानिस्तान में होने वाली अफीम उत्पादन एवं उसकी तस्करी पर लगाम लगाना है। अफगानिस्तान और पाकिस्तान भारत के पड़ोसी राष्ट्र हैं इस नाते भारत के लिये एक चुनौतीपूर्ण स्थित है आने वाले दिनों के लिये भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिये एक बहुत ही गंभीर खतरा बनकर उभर रही है इस पर सरकारों को जल्द ही उचित एवं निर्णायक कार्यवाही की आवश्यकता है जिससे भारती की आंतरिक सुरक्षा एवं अखंडता बनी रहे।

References

1. Dr. Pushpita Das, Drug Trafficking in India: A Case for Border Security, Occasional Paper No. 24 May 2012, Institute for Defence Studies and Analyses New Delhi.
2. Deepali Gaur Singh, Drugs Production and Trafficking in Afghanistan,2007,Pentagon Press, New Delhi
3. Brig V P Malhotra (Retd), Terrorism and Counter Terrorism in South Asia and India, 2011, Vij Books India Pvt. Ltd., New Delhi.
4. Christine Jojarth, Crime, War, and Global Trafficking, 2009, Cambridge University Press, New York.
5. Frank Shanty, the Nexus: International Terrorism and Drug Trafficking from Afghanistan, 2012, Pentagon Press, New Delhi.
6. NBR special report #20, narco-jihad: drug trafficking and security in Afghanistan and Pakistan, December 2009.
7. Narcontrol, A journal of Narcotics Control Bureau, Vol.2–issue-I&II,June-2012,http://narcoticsindia.nic.in
8. Narcontrol, A journal of Narcotics Control Bureau, issue- II, June-2015, http://narcoticsindia.nic.in
9. Annual Report, 2014, Narcotics Control Bureau, Ministry of Home Affairs, Government of India.
10. The Afghan Opiate Trade and Africa- A Base Line Assessment, 2016, UNODC.
11. UNODC Annual Report, 2014
12. UNODC Annual Report, 2015
13. Afghanistan Opium survey: Socio-economic analysis, 2015, UNODC & Islamic Republic of Afghanistan, Ministry of counter Narcotics.
14. Dr. Pushpita Das, Drug Trafficking in India: A Case for Border Security, Occasional Paper No. 24 May 2012, Institute for Defence Studies and Analyses New Delhi.
15. Deepali Gaur Singh, Drugs Production and Trafficking in Afghanistan,2007,Pentagon Press, New Delhi
16. Brig V P Malhotra (Retd), Terrorism and Counter Terrorism in South Asia and India, 2011, Vij Books India Pvt. Ltd., New Delhi.
17. Christine Jojarth, Crime, War, and Global Trafficking, 2009, Cambridge University Press, New York.
18. Frank Shanty, the Nexus: International Terrorism and Drug Trafficking from Afghanistan, 2012, Pentagon Press, New Delhi.
19. NBR special report #20, narco-jihad: drug trafficking and security in Afghanistan and Pakistan, December 2009.
20. Narcontrol, A journal of Narcotics Control Bureau, Vol.2–issue-I&II,June-2012,http://narcoticsindia.nic.in
21. Narcontrol, A journal of Narcotics Control Bureau, issue- II, June-2015, http://narcoticsindia.nic.in
22. Annual Report, 2014, Narcotics Control Bureau, Ministry of Home Affairs, Government of India.
23. The Afghan Opiate Trade and Africa- A Base Line Assessment, 2016, UNODC.
24. UNODC Annual Report, 2014
25. UNODC Annual Report, 2015
26. Afghanistan Opium survey: Socio-economic analysis, 2015, UNODC & Islamic Republic of Afghanistan, Ministry of counter Narcotic̀